।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः।।

तत्व बोध

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था
नई दिल्ली
अंक – 10

श्री साई शक 43
30 मार्च 2025

गुड़ी – पड़वा

आज के दिन हम सब गुड़ी–पड़वा का उत्सव मनाने एकत्रित हुए है। आने वाले नवीन वर्ष के लिए एक नई उमंग के साथ नवीन संकल्प करने का दिवस है। श्री गुरु ने कृपावंत होकर हमें इस गुरुकार्य में शामिल किया है। उनके उपकार की उतराई के लिए हमें नवीन ऊर्जा के साथ प्रयास करने है। जिस गुरुकार्य का लाभ हम लगातार लेते आ रहे है उस गुरुकार्य का लाभ मानव कल्याण के लिए औरों को भी हो इसके लिए अपने जीवन का कुछ अंश हमने गुरुकार्य के लिए देना है और स्वयं का रूपांतरण करने का प्रयत्न करना है।

हम शक्तिपीठ प्रार्थना में रोज कहते है, ''जो कोई इस जगत में दुखी, कष्टी है उनकी सेवा काया, वाचा, मन से करेंगे।'' लेकिन रोजमर्रा के जीवन में हम भौतिक इच्छा, अपेक्षाओं में इतना उलझ गए है कि हमसे यह सेवा होना मुश्किल हुआ है। फिर इसके लिए हमने क्या करना है? हमने अपना काया, वाचा, मन श्री गुरु को अर्पण करना होगा लेकिन क्या हमारा काया, वाचा, मन श्री गुरु चरणों में अर्पण करने योग्य है? नहीं। इसके लिए हमने अपने काया, वाचा, मन को स्थित्यंतरित करना आवश्यक है मतलब हमने अपने काया, वाचा, मन को आकार देकर उसको तन, मन, धन बनाना है।

सर्वप्रथम है काया। काया को आकार देकर उसे 'तन' बनाना है मतलब हमारे शरीर को आकार देकर उसे गुरुकार्य के लिए योग्य रूप में स्थित्यंतरित करना है। इसमें शरीर को बलवान बनाना या उपवास करके सुखाना नहीं है बल्कि हमारी दिनचर्या निश्चित करके योग्य आचरण एवं नित्य उपासना द्वारा हमारी काया को 'तन' में स्थित्यंतरित करना है। यह हम सुलभता से कर पाए इसलिए श्री गुरु ने हमें सिद्ध ॐकार साधना दी है। इसे हमने अपनी दिनचर्या का भाग बनाना है। योग्य आचरण मतलब अपने नित्य जीवन में हम जिन वस्तुओं या व्यक्तियों का लाभ लेते है उनके प्रति हमने उपकार की भावना रखनी है। जो भी भौतिक वस्तुऐं है उन्हें योग्य स्थान पर रखना है, तरीके से संभालना है, उनका जतन करना है।

काया को आकार देते समय वाचा को भी आकार देना है। वाचा का स्थित्यंतर 'धन' में करना है। परमेश्वर ने हमें अन्य प्राणियों की तुलना में जो कुछ ज्यादा दिया है उसमें प्रमुख है 'वाचा'। यही हमारा धन है और धन मिलने से हमें जो आनंद मिलता है वैसा ही आनंद हमारी वाचा से औरों को मिलना चाहिए। जब वं. दादा जी और दीपक दादा देहरूप में थे तब भक्तों को लगता था कि वे उनसे बात करें क्योंकि उनकी बातों से भक्तों को आनंद का अनुभव होता था। उनकी वाचा का स्थित्यंतर 'धन' में हुआ था। आज हमें लगता है कि बाऊजी हमसे बात करें क्योंकि उनकी बातों से हमें आनंद का अनुभव होता है। उनकी वाचा का स्थित्यंतर 'धन' में हुआ है। ऐसा ही प्रयास हमने भी करना है ताकि हमारी वाचा का स्थित्यंतर धन में हो।

अब तीसरा है 'मन'। मन का स्थित्यंतर मन की विकसित अवस्था में करना है मतलब हमने नित्य क्रिया में मन की धारणा करनी है। जब कोई काम हम एकाग्र होकर करते है तब उसमें मन की धारणा होती है। जब हमारे काया, वाचा, मन में एक ही विषय होता है तब उस विषय द्वारा मन की धारणा होती है। हम सभी के जीवन में ऐसे कुछ पसंदीदा विषय जरूर होते है जब हम सहजता से एकाग्र हो पाते है और मन की धारण होती है। श्री गुरु ने दी हुई ॐकार साधना ऐसी है कि जगत का प्रत्येक व्यक्ति उसमें एकाग्र होने लगता है क्योंकि साधना में शामिल गुरुशक्ति की गति काया, वाचा, मन की गति को व्याप्त कर लेती है। इस सिद्ध साधना का लाभ लेकर हमने अपने मन को आकार देना है मतलब मन की धारणा करने की आदत करनी है।

हमारे काया, वाचा, मन का स्थित्यंतर तन, मन, धन में हो इसलिए श्री गुरु ने हमें जो सिद्ध साधन दिए है वे है ॐकार साधना, आरती साधना, मुलाकात साधना, दैनंदिन प्रार्थना। इन साधनों का नित्य लाभ लेने से जब हमारे काया, वाचा, मन का तन, मन, धन में स्थित्यंतर होगा तब हमारे माध्यम से गुरुशक्ति प्रवाहित होने लगेगी और हमारे अनजाने में हमारे माध्यम द्वारा गुरुकार्य मतलब मानव कल्याण का कार्य होगा। हम सभी के माध्यम गुरुकार्य के लिए योग्य बने ऐसी, प.पू. साईबाबा, वं. दादाजी एवं दिव्य, पूण्य विभूतियों के चरणों में प्रार्थना।

।। शुभं भवतु।।